18-09-2012

किसानों ने पैदा किया है खुद का कीट ज्ञान

किसान पाठशाला में खाप चौधरियों ने रखा कीटों का पक्ष

कुलदीप सिंह . जींद

ज्ञान, विज्ञान और तकनीक देश के विकास की धूरी होती हैं। ज्ञान व विज्ञान को जनता पैदा करती और यह जनता के ही काम आता है। लेकिन तकनीक व्यापार को ध्यान में रखकर पैदा की जाती है और तकनीक जनता की बजाए पैदा करने वाले के ही काम आती है। यह बात कृषि विकास अधिकारी डा. सुरेंद्र दलाल ने मंगलवार को निडाना गांव की

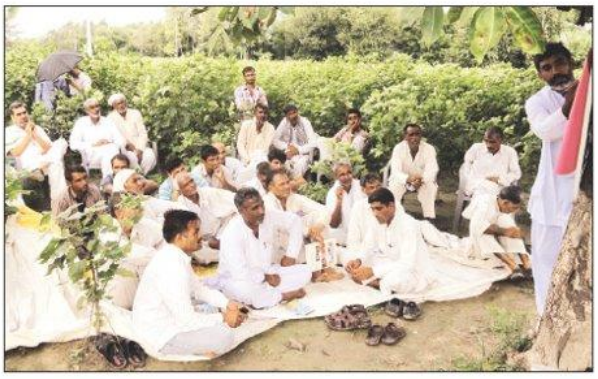

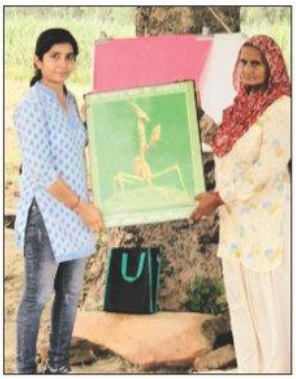

जींद। बही खाते में कीटों के आंकड़े दर्ज करवाते किसान। चैनल की टीम को स्मृति चिह्न भेंट करती महिला किसान खेत पाठशाला की महिलाएं।

■ निडाना में किसान-खेत पाठशाला का आयोजन

किसान खेत पाठशाला में खाप पंचायत की 13वीं बैठक में कही। बैठक की अध्यक्षता सर्वखाप पंचायत के संयोजक कुलदीप ढांडा ने की। इस अवसर पर बैठक में कुंडू खाप कालवा के प्रधान सुभाष कुंडू, प्रसिद्ध समाजसेवी देवव्रत ढांडा, बागवानी विभाग से डीएचओ डा. बलजीत भ्याणा व पेहवा से आए प्रगतिशील किसान शीतल राम भी मौजूद थे।

डा. दलाल ने कहा कि देश में 26 से भी ज्यादा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटियां हैं और इन यूनिवर्सिटियों की स्थापना देश में तकनीक को बढ़ावा देने के लिए ही की गई थी। डा. दलाल ने कहा कि आज कृषि क्षेत्र में कीटनाशकों का जो प्रयोग बढ़ रहा है वह भी तकनीक का ही एक हिस्सा है।

लेकिन निडाना के किसानों ने कोई नई तकनीक अपनाने की बजाए कीट विज्ञान को अपना कर अपना खुद का कीट ज्ञान पैदा किया है। उन्होंने कहा कि कीट ज्ञान का मतलब फसल में कीटों के क्रियाकलापों को समझना व कीटों का परखना है। पाठशाला की शुरूआत फसल में कीट सर्वेक्षण से की गई। जिसमें किसानों ने हिस्सा लिया।

कीटों का सर्वेक्षण पेश

कीट कमांडो किसानों ने कीटों का सर्वेक्षण कर खाप प्रतिनिधियों के सामने फसल में मौजूद कीटों का आंकड़ा रखा। इस दौरान आस-पास के गांवों से आए किसानों ने कीट बही खाते में अपने-अपने कपास के खेत से तैयार किए गए फल, फूल व बोकी का आंकड़ा भी दर्ज करवाया। किसानों द्वारा दर्ज करवाए गए आंकड़े में फल की प्रति पौधा औसत 60 से 80, फूल की 1 से 3 तथा बोकी की 7 से 12 की औसत आई। अन्य किसानों ने अपने ब्यौरे पेश किए।

कैमरे में कैद किए अनुभव

लोकसभा चैनल दिल्ली की टीम ने मंगलवार को किसान खेत पाठशाला में पहुंचकर किसानों के अनुभव को अपने कैमरे में कैद किया। चैनल की असिस्टैंट डायरेक्टर प्रियंका ने एडिटर अमल, प्रोडेक्शन एसिस्टेंट शनि व कैमरामैन मुन्ना के साथ गुरुवार को प्रसारित होने वाले विज्ञान दर्पण तथा शुक्रवार को प्रसारित होने वाले साइंस दिस विक कार्यक्रम की शूटिंग के लिए यहां पहुंची थी। टीम ने निडाना ललीतखेड़ा में महिला किसानों के क्रियाकलापों व उनके अनुभव की रिकार्डिंग की।

12-09-2012

कीटों के साथ महिलाओं की जंग, कीट सर्वेक्षण पाठशाला शुरू

हरिभूमि न्यूज. जींद

कीटों के साथ महिलाओं की जंग जारी है। महिलाओं ने अपने भाइयों की थाली को जहर मुक्त करने का जो प्रण लिया है, उस प्रण को पूरा करने के लिए बुधवार को गांव ललितखेड़ा निवासी पूनम के खेत में महिला किसान खेत पाठशाला का आयोजन किया गया। पाठशाला में ललीतखेड़ा, निडाना व निडानी गांव की महिलाओं ने भाग लिया।

जींद। कपास की फसल में मौजूद कीटों का बही खाता दर्ज करती महिलाएं।

कपास के खेत कीटों का अवलोकन करती महिलाएं। फोटो: हरिभूमि

कपास कीट सर्वेक्षण शुरू

गांव ललितखेड़ा में बुधवार को खेत पाठशाला की शुरूआत कपास कीट सर्वेक्षण के साथ हुई। महिलाओं ने कपास की फसल में लगभग एक घंटे तक कीटों अवलोकन व निरिक्षण किया। कीट सर्वेक्षण के बाद महिलाओं ने कीट बही खाता तैयार किया। इसके साथ-साथ महिलाओं ने कपास की फसल में मौजूद पर्णभक्षी कीटों व मांसाहारी कीटों के क्रियाकलापों के बारे में भी अपने-अपने अनुभव रखे।

कीटनाशक की जरूरत

मास्टर ट्रेनर अंग्रेजों ने बही खाते में दर्ज आंकड़ों के आधार पर बताया कि अभी तक कपास की फसल में किसी भी प्रकार के कीटनाशक की जरूरत नहीं है। हमें कीटों को मित्र या दुश्मन के नजरिए से नहीं देखना चाहिए। शाकाहारी कीट पौधों पर अपना जीवन यापन करने के लिए आते हैं और पौधों के पत्ते, फूल इत्यादि खाकर अपनी वंशवृद्धि करते हैं। मांसाहारी कीटों को अपना जीवन यापन करने के लिए मांस की जरूरत होती है। शाकाहारी कीटों के साथ-साथ पौधों पर आ जाता है। कोई भी कीट किसानों को नुकसान व लाभ पहुंचाने के लिए पौधों पर नहीं आता है।

पर्णभक्षी कीटों की जरूरत

महिला किसान कमलेश ने बताया कि फिलहाल कपास के पौधों को पर्णभक्षी कीटों की सबसे ज्यादा जरूरत है। क्योंकि पर्णभक्षी कीट पौधों के ऊपरी हिस्सा के पतों में छेद कर नीचे के पत्तों के लिए प्रकाश संशलेषण का रास्ता तैयार करते हैं। इससे नीचे के पत्ते पौधे के लिए पर्याप्त भोजन बनाने में सक्षम हो जाते हैं। इसलिए ये हमारे दोस्त होते है। कीटनाशकों के माध्यम से कीटों को कंट्रोल करने का प्रयास करते हैं। शाकाहारी कीटों के साथ-साथ मासाहारी कीट भी मारे जाते है। इससे आगे चलकर फसल पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें कीटों को कंट्रोल नहीं पहचानने की जरूरत है।

05-09-2012

दूरदर्शन पर निडाना खेत पाठशाला का प्रसारण हुआ, कीटों पर फोकस था कार्यक्रम

टीवी पर दिखे अपणे किसान

जींद। खेत पाठशाला में किसानों को कीटों की जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र दलाल। फोटो: हरिभूमि

दिल्ली दूरदर्शन की टीम ने 28 अगस्त को गांव निडाना पहुंचकर कृषि दर्शन कार्यक्रम के तहत पाठशाला की रिकॉर्डिंग की थी।

- डॉ. सुरेंद्र दलाल की मुहिम को देखा 134 देशों ने
- सुबह साढ़े छह बजे प्रसारित हुआ कार्यक्रम

कुलदीप सिंह. जींद

दिनांक चार सितंबर दिन शुक्रवार। समय सुबह के साढ़े छह बजे। जैसे ही घड़ी में साढ़े छह बजे वैसे ही दूरर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम कृषि दर्शन पर प्रसारित हुआ निडाना खेत पाठशाला का प्रसारण। अपनी पाठशाला को देखने के लिए किसान अपने टीवी सेटों से चिपके रहे। जैसे-जैसे प्रसारण आगे बढ़ रहा था किसान आपस में कीटों के प्रति टीवी में बताए गए अपने वक्तव्यों को आपस में बांट रहे थे। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले खेत पाठशाला कार्यक्रम की विशेष बात यह रही कि इसे न केवल भारत में देखा गया बल्कि भारत के साथ-साथ 134 देशों में भी प्रसारित किया। खेत पाठशाला का प्रसारण देख खेत पाठशाला के किसान गदगद हो गए और हर कोई दूरदर्शन टीम को बताई गई अपनी बात का इंतजार कर रहा था। दिल्ली दूरदर्शन टीम द्वारा गत 28 अगस्त को गांव निडाना पहुंचा कर कृषि दर्शन कार्यक्रम के तहत खेत पाठशाला का जायजा लिया और इस में चलने वाली कार्रवाई को अपने कैमरे में कैद किया। दूरदर्शन की इस टीम में रिपोर्टर विकास डब्बास, कैमरामैन सर्वेश व राकेश के अलावा 84 वर्षीय वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डा. आरएस सांगवान ने किसानों से उनकी बातों को सांझा किया था। शुक्रवार सुबह जैसे ही साढ़े छह बजे तो गांव निडाना, ललितखेड़ा तथा आसपास लगते गांवों के किसान अपने-अपने टीवी सेटों से चिपक गए। अलेवा निवासी किसान जोगेंद्र ने कृषि वैज्ञानिक को अपने अनुभव के बारे में बताया कि वह 1988 से खेती बाड़ी के कार्य से जुड़ा हुआ है। खेतीबाड़ी के कार्य से जुड़ने के साथ ही उसने अपने खेतीबाड़ी के सारे खर्चा का रिकार्ड भी रखना शुरू किया हुआ है। 1988 से लेकर 2011 तक वह अपने खेतों में 70 लाख के पेस्टीसाइड डाल चुका था। लेकिन इस बार उसने निडाना के किसानों के साथ जुड़ने के बाद अपने खेत में एक बार भी कीटनाशक नहीं डाला है और अब वह खुद भी कीटों की पहचान करना सीख रहा है। वहीं किसान मनबीर ने बताया कि वह भी कीटों की पहचान कर रहा है। उसने निर्णय लिया है कि जो अब कीटनाशक रहित खेती करेगा।

साझा किए विचार

निडानी के किसान जयभगवान ने बताया कि वह 14 वर्ष की उम्र से ही खेती के कार्य में लगा हुआ है। जयभगवान ने बताया कि उनके एक रिश्तेदार की पेस्टीसाइड की दुकान है और वह हर वर्ष उससे कंट्रोल रेट पर दवाइयां खरीदता था। कंट्रोल रेट पर दवाइया मिलने के बाद भी उसका हर वर्ष दवाइयों पर 80 हजार रुपए खर्च हो जाता था। लेकिन पिछले दो वर्षों से उसने इस मुहिम से जुड़ने के बाद कीटनाशकों का प्रयोग बिल्कुल बंद कर दिया है। डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि वर्ष 2009 में गांव निडाना में खेत पाठशाला शुरू की गई थी। तब से लेकर आज तक उनकी पाठशाला के अभूतपूर्व परिणाम सामने आए हैं। किसानों को मांसाहारी तथा शाकारी कीटों की पहचान हुई है और किसान अब कीटनाशक रहित खेती कर हमारी थाली को जहर मुक्त कर रहे हैं।

कीटों पर किसानों की जानकारी देख हतप्रभ हुए डॉ. देवेंद्र शर्मा

जींद। गांव निडानी में किसानों से रू-ब-रू होते डॉ. देवेंद्र शर्मा। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज. जींद

गांव निडानी में किसान खेत पाठशाला में शिरकत करने पहुंचे विश्व विख्यात खाद्य एवं कृषि विशेषज्ञ डा. देवेंद्र शर्मा किसानों से करीब से रू-ब-रू हुए। उन्होंने किसानों द्वारा हासिल की गई कीट की जानकारी के बारे में विस्तार से पूछा। साथ ही, अपने अनुभव भी शेयर किए। कीटों के बारे में किसानों का ज्ञान देखकर डॉ. देवेंद्र हतप्रभ रह गए। उन्होंने किसानों को इस बारे में जागरूक करने के लिए डॉ. सुरेंद्र दलाल के प्रयासों की काफी सराहना की। खेत पाठशाला का संचालन खाप पंचायत के संचालक कुलदीप सिंह ढांडा ने किया। ढांडा ने खाप चौधरियों से पूछाकि क्या आप पूरे दृढ़ निश्चय के साथ यह कह सकते हैं कि आपके परिवार या रिश्तेदारी में कोई कैंसर का मरीज नहीं है। कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से कैंसर तेजी से फैली है। गांव चिढोठ जिला भिवानी में हर पांचवें घर में तथा भटिंडा की गली नंबर दो के 10 घरों में से 9 घरों में कोई ना कोई व्यक्ति कैंसर का मरीज है।

पौधों की भाषा सीखें

किसान मनबीर ने बताया कि हमें पौधों की भाषा सीखने की जरुरत है। जब पौधों पर किसी शाकाहारी कीट का आक्रमण होता है तो पौधे मासाहारी कीटों को बुलाने के लिए एक अलग तरह की सुगंध छोड़ते है और मासाहारी कीट उस सुगंध के कारण फसल में शाकाहारी कीटों को खाने के लिए पहुंच जाते हैं। पाठशाला के समापन पर सभी खाप प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

अटैक से प्रजनन क्षमता में वृद्धि

किसान रमेश ने बताया कि किसान कीटनाशक के माध्यम से कीटों पर जैसे ही अटैक करता है तो कीट अपना जीवनकाल छोटा करना शुरू कर देते हैं तथा बच्चे पैदा करने की क्षमता को बढ़ा लेते हैं। इससे खेत में कीटों की संख्या कम होने की बजाए और अधिक बढ जाती है। किसान अजीत ने बताया कि अंगीरा, जंगीरा, फंगीरा अकेले ही 98 प्रतिशत मिलीबग को कंट्रोल कर लेते हैं।